Date ___/___/___

कला के अर्थ को समझने के लिए कुछ विशिष्ट विद्वानों द्वारा दी गयी कला की परिभाषा को जानाना आवश्यक है:—

1) कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार – "जो सत् है, जो सुन्दर है, वही कला है।"

2) कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार – "कला अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति है।"

3) टॉलस्टाय के अनुसार — "कला एक मानवीय क्रिया है जिसमें एक व्यक्ति जागरूक अवस्था में बाह्य प्रतीकों के माध्यम से, अपनी उन भावनाओं को जिसमें वह जी रहा होता है, दूसरों को संचारित करता है तथा दूसरे व्यक्ति भी उन भावनाओं से प्रभावित होते हैं, और उनका अनुभव करते हैं।"

भारत में कला को एक साधना माना गया है। कला हमारे विचारों का एक द्रव्य रूप है। जिसमें ये तीन योग्यताएँ सन्निहित होते हैं — कल्पनाशक्ति, आदर्श प्रियता और सृजनात्मकता। यदि कला के संदर्भ में इतिहास का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि कला का अर्थ उसके प्रभाव में निहित होता है। जब मनुष्य गुफाओं में रहता था, तब से लेकर आज तक कला के [redacted] विविध रूप सामने आये, इन रूपों पर देश, काल की परिस्थियों का प्रभाव रहा जिस काल में मनुष्य को जो भी मिला उसने उसे ही सृजन का माध्यम बना लिया। — ताड़ पत्र, छाल, गुफाएँ कपड़ा, दीवारें, चट्टानें आदि।

Scanned with CamScanner